श्रीजानकीवल्लभो विजयते ।

अथ मूल गोसाईंचरित

(बाबा वेणीमाधवदासकृत)

सो० सन्तन कहेउ बुझाय, मूलचरित पुनि भाषिये ।
अति संक्षेप सोहाय, कहौं सुनिय नित पाठ हित ॥ १ ॥
चरित गोसाईं उदार, बरनिसकहिंनाहिंसहसफनि ।
हौं मति-मन्द गँवार, किमि बरनौं तुलसी सुयश ॥ २ ॥

ऋषि आदिकवीश्वर ज्ञाननिधी । अवतरित भये जनु आपुबिधी ॥
शत कोटि बखानेउ रामकथा । तिहुँ लोक में बांटेउ शंभु यथा ॥
दश-स्यन्दन वेद दशांगमयं । श्रुति त्रैविधि तीनिउ रानिजयं ॥
श्रीराम प्रणव श्रुति तत्त्व परं । निज अंशनि युत नरदेह धरं ॥
इमि कीन्ह प्रबन्ध मुनीश यथा । हरि कीन्ह चरित्र पवित्र तथा ॥
हनुमन्त प्रणव-प्रिय-प्राण रसै । परतत्त्व रमै तिसु सीस लसै ॥
यहि भांति परात्पर भाव लिये । शुचि राम परत्त्व बखान किये ॥
मुनिराज लखे अद्भुत रचना । कपिराज सों कीन्ह इहै जँचना ॥
यह गुप्त रहस्य है गोइ धरैं । बिनती हमरी न प्रकाश करैं ॥
तब अंजनि-नंदन शाप दियौ । हँसिकै मुनि धारण सीस कियौ ॥

दो० सहन शीलता मुनि निरखि, पवन-कुमार सुजान ।
बहुविधि मुनिहिं प्रशंसि पुनि, दिये अभयवरदान ॥ १ ॥

कलिकाल में लैहहु जन्म जबै । कलिते तव त्राण सदा करबै ॥
तेहि शाप के कारण आदि कवी । तमपुंज निवारन हेतु रवी ॥
उदये हुलसी उदघाटिहिते । सुर सन्त सरोरुह से विकसे ॥
सरवार सुदेश के विप्र बड़े । शुचिगोत पराशर टेक कड़े ॥

शुभ थान पतेजि रहे पुरखे। तेहिते कुल नाम पड़्यो भुरखे॥
यमुना तट दूबन को पुरवा। बसते सब जातिन को कुरवा॥
सुकृती सतपात्र सुधी सुखिया। रजियापुर राजगुरू मुखिया॥
तिनके घर द्वादश मास परे। जब कर्क के जीव हिमांशु चरे॥
कुज सप्तम अष्टमभानु-तनय। अभिजितशनिसुन्दरसांझसमय॥

दो० पन्द्रह सै चउवन विषै, कालिन्दी के तीर।
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी धरेउ शरीर॥ २॥

सुत जन्म बधाव लग्यो बजने। सजने छजने रजने गजने॥
इक दासि कढ़ी तेहि अवसर में। कहिदेव बुलावत हैं घरमें॥
शिशु जन्मत रंचहु रोओ नहीं। सोतोबोलेउरामगिरेउज्योंमहीं॥
अब देखिय दन्त बतीसी जमी। नहिं खोल्हड़ पांतिमें नेक कमी॥
जस बालक पांच को देखिय जू। तस जन्मतु आनि जलोखियजू॥
अब बूढ़ि भई भरि जन्म नहीं। शिशु ऐसो मैं देखिउं तात कहीं॥
महरी कहती सुनि शंख धुनी। जबहीं सोसभय शिशुनार छुनी॥
जो लुगाइ हतीं कपतीं बकतीं। कोउराकसजामेउकहि झखतीं॥
महराज चलिय अब वेगि घरैं। समुझाय प्रसूति को ताप हरैं॥

दो० उठे तुरत भृगुवंशमणि, सुनत चेरि के वैन।
ठाढ़ प्रसूती द्वार भे, पूरित जल सों नैन॥ ३॥

छंद

पूरितसलिलदृग निरखि शिशु परितापयुत मानसभये।
मनमहँ पुराकृत पाप को परिनाम गुनि बाहिर गये॥
तब जुरे सब हित मित्र बान्धव गणक आदि प्रसिद्ध जे।
लागे विचारन का करिअ नवजात शिशु कहँ कहहिं ते॥ १॥

दो० पंचन यह निर्णय किये, तीन दिवस पश्चात।
जियतरहै शिशु तब करिअ, लौकिक वैदिक बात ॥ ४॥

दशमी पर लागेउ ग्यारस ज्यों। घड़ि आठकरातिगईजबत्यों॥
हुलसी प्रिय दासि सों लागि कहै। सखि प्राण-पखेरु उड़ान चहै॥
अबहीं शिशु लै गवनहु हरिपुर। बसते जहँ तोरिउ सास-ससुर॥
तहँ जोइबि पालबि मोर लला। हरिजू करिहैं सखि तोर भला॥
नहिं तो ध्रुव जानहु मोरे मुये। शिशु फेंकि पँवारहिं गे भकुये॥
सखि जान न पावै कोऊ बतियां। चलिजाइहु मग रतियांरतियां॥
तेहि गोद दियो शिशु ढारसदै। निज भूषण दैदियो ताहि पठै॥
चुप चाप चली सो गई शिशु लै। हुलसी उर सूनु-वियोग फबै॥
गोहराइ रमेश महेश विधी। बिनती करि राखबि मोर निधी॥

दो० ब्रह्ममुहूर्त्त एकादशी, हुलसी तजेउ शरीर।
होत प्रात अन्त्येष्टि हित, लैगे यमुना तीर ॥ ५॥

घड़ि पाँचक बार चढ़ै मुनियाँ। निज सासके पायँ गही चुनियाँ॥
सब हाल-हवाल बताय चली। सुनि सास कही बहु कीन्ह भली॥
घर माहिं कलोर को दूध पिया। बिनुमायकोहैशिशुलेसिजिया॥
तहँ पालन सो लगि नेह भरै। जेहिते शिशु रीझइ सोइ करै॥
यहि भांति सों पैंसठ मास गये। शिशुबोलन डोलन योग भये॥
चुनियाँ सुरलोक सिधार गई। डस्योपन्नगज्यों सो कोरार गई॥
तब राजगुरू को कहाव गयो। सुनिकै तिनहूँ दुख मानि कह्यो॥
हम का करिबै अस बालक लै। जेहि पालै जो तासु करै सोइ छै॥
जन्मेउ सुत मोर अभागो महीं। सो जिये वा मरै मोहिं शोच नहीं॥

दो० वेणी पूरब जन्मकर, कर्मविपाक प्रचण्ड।

विना भोगाए टरत नहिं, यह सिद्धान्त अखण्ड ॥ ६ ॥

छंद

सिद्धान्त अटल अखण्ड भरि ब्रह्मण्ड व्यापित सत यथा।
जहँ मुनिवरन की यह दशा तहँ पामरन की का कथा ॥
निज छति विचारि न राख कोऊ दया दृग पाछे दियो।
डोलत सो बालक द्वार द्वार विलोकि तेहि विहरत हियो॥ २॥

सो० बालक दशा निहारि, गौरा माई जग-जननि।
द्विज-तिय रूप सँवारि, नितहिं पवाजावहि अशन ॥३॥

दुइ वत्सर बीतेउ याहि रसे। पुर लोगन कौतुक देखि कसे ॥
जिन जोह-जसूस पै आय जकै। परिचय द्विज नारि न पाय थकै॥
चर-नारि हती तहँ सो परखी। जब माय खवाय लला टरखी ॥
परिपायँ करी हठ जान न दे। जगदम्ब अदृश्य भई तब ते ॥
शिव जानि प्रिया व्रत हेतु हियो। जनलौकिकसुलभउपायकियो॥
प्रिय शिष्य अनन्तानन्द हते। नरहरियानन्द सुनाम छते ॥
बसै रामसुशैल कुटी करिकै। तल्लीन दशा अतिप्रिय हरिकै ॥
तिन कहँ भव दर्शन आपु दिये। उपदेशहुँ दै कृतकृत्य किये ॥
प्रिय मानस-रामचरित्र कहे। पठये तहँ जहँ द्विजपुत्र रहे ॥

दो० लै बालक गवनहु अवध, विधिवत मंत्र सुनाय।
मम भाषित रघुपति कथा, ताहि प्रबोधहु जाय ॥ ७ ॥
जब उघरहिं अन्तर्दृगनि, तब सो कहिहि बनाय।
लरिकाईं को पैरिबो, आगे होत सहाय ॥ ८ ॥

सो० शम्भु वचन गम्भीर, सुनि मुनि अति पुलकित भये।
सुमिरि राम रघुवीर, तुरत चले हरिपुर तके ॥ ४ ॥

पुर हेरि के बालक गोद लिये। द्विजपुत्र अनाथ सनाथ किये॥
कह्यो रामबोला जनि सोच करै। पलिहैं पोसिहैं सब भांति हरै॥
सो तो जानेउ दीन-दयालु हरी। मम हेतु सुसन्त को रूप धरी॥
पुरलोगन केर रजाय लिये। सह बालक सन्त पयान किये॥
पन्द्रह सै इकसठ माघ सुदी। तिथि पंचमि औ भृगुवार उदी॥
सरयू तट विप्रन यज्ञ किये। द्विजबालक कहँ उपवीत दिये॥
सिखये बिनु आपुइ सो बरुआ। द्विजमंत्र सवित्रि सुउच्चरुआ॥
विस्मययुत पंडित लोग भये। कहे देखत बालक विज्ञ ठये॥

दो० नरहरि स्वामी तब किये, संस्कार विधि पांच।
राममंत्र दिये जेहि छुटै, चौरासी को नाच॥ ९॥

दस मास रहे मुनिराज तहाँ। हनुमान सुटीला विराज जहाँ॥
निज शिष्यहिं विद्या पढ़ाय रहे। अरु पानिनि सूत्र घोषाय रहे॥
लघु बालक धारनशक्ति जगी। अनुरक्ति सभक्ति दिखान लगी॥
हरषे गुण ग्राम विचारि हिये। पद चापत आशिष भूरि दिये॥
जबते जन्मेउ तबते अबलों। निज दीन दशा कहिगो गुरु सों॥
ठक से रहिगे सुनि बालकथा। करुणा उरमें उपजाइ व्यथा॥
मुनि धीर भरे दृग नीर रहे। गुरुशिष्य दशा कवि कौन कहे॥
समुझाय बुझाय लगाय हिये। कहि भावि भलाइ प्रशांत किये॥
हरिप्रिय ऋतु लाग हेमन्त जबै। सिख संग लै कीन्ह पयान सबै॥

दो० कहत कथा इतिहास बहु, आये शूकरखेत।
संगम सरयू घाघरा, सन्त जनन सुख देत॥ १०॥

तहँवाँ पुनि पांचउ वर्ष बसे। तपमें जप में सब भांति रसे॥
जब शिष्य सुबोध भयो पढ़िकै। मति युक्ति-प्रवीन भई गढ़िकै॥

सुधि आइ महेश सिखावनकी। परतत्त्व प्रबन्ध सुनावन की॥
तब मानस-राम-चरित्र कहे। सुनिकै मुनि बालक तत्त्व गहे॥
पुनि-पुनि मुनि ताहि सुनावतभे। अतिगूढ़ कथा समुझावत भे॥
यहि भांति प्रबोधि मुनीश भले। वसुपर्व लगे सह शिष्य चले॥
विश्राम अनेक किये मगमें। जल-अन्नको खेल मच्योजगमें॥
कतहूं सुकृतिन उपदेश करैं। कतहूँ दुखिया दुखदाप हरैं॥

दो॰ विचरत विहरत मुदित मन, आये काशी धाम।
परम गुरू सुस्थान पर, जाय कीन्ह विश्राम॥ ११॥

सुठि घाट मनोहर पंच पगा। गाँगिया कर कौतुक-केलि झगा॥
पुनि सिद्ध सुपृष्ठ प्रतिष्ठित सो। बहुकाल यतीन्द्र रहे जु नमो॥
तहँवाँ हते शेष सनातन जू। वपुवृद्ध वरञ्च युवा मनजू॥
निगमागम पारग ज्योति फबै। मुनिसिद्ध तपोधन जान सबै॥
तिन रीझ गए बटुपै जबही। गुरुस्वामिसों सुन्दर बात कही॥
निज शिष्यहिं देइये मोहि मुनी। तिसु वृत्ति दुनी नहिं ध्यान धुनी
हौं ताहि पढ़ाउब वेद चहूँ। अरु आगम दर्शन पाठ छहूँ॥
इतिहास पुराण रु काव्यकला। अनुभूत अलभ्य प्रतीक फला॥
विद्वान महान बनाउब जू। सुनि आपु महासुख पाउब जू॥

दो॰ आचारज बिनती सुनत, पुलकित भे मुनिधीर।
बटु बुलाय सौंपत भये, पावन गंगा तीर॥ १२॥
कछु दिन रहिगे यति प्रवर, पढ़न लग्यो बटुभास।
चित्रकूट कहँ तब गये, लखि सब भांति सुपास॥ १३॥

बटु पन्द्रह वर्ष तहाँ रहिकै। पढ़ि शास्त्र सबै महिकै गहिकै॥
करिकै गुरु-सेवा सदय तनसे। गत देह क्रिया करि सौ मनसे॥

चले जन्म थलीको विषादभरे। पहुँचे रजियापुर के बगरे॥
निज भौन विलोकेउ ढूह-ढहा। कोउ जोवन जोग न लोग रहा॥
इक भाट बखानेउ ग्राम कथा। द्विजवंशको नाश भयो जु यथा॥
कह्यौ जादिन नाइसे राज-गुरू। तब त्यागकी बोलेउ बात करू॥
तहँ बैठु रह्यौ तप तेज-धनी। तिन शाप दियो गहि नागफनी॥
षट मासके भीतर राजगुरू। दस वर्ष के भीतर वंश मरू॥
सुनि कै तुलसी मन शोक छये। करि श्राद्ध यथा विधि पिंड दये॥

दो० पुर लोगन अनुरोध ते, दियो भवन बनवाय।
रहन लगे अरु कहत भे, रघुपति कथा सुहाय॥ १४॥

यमुना पर तीर मों तारिपतो। भरद्वाज सुगोत को विप्र हतो॥
कतिकी दुतिया कर न्हान लगे। सकुटुम्ब सो आयउ संग सगे॥
करि मज्जन दान गए तहँवां। हुलसी-सुत बांच कथा जहँवां॥
छवि व्यास विलोकि प्रसन्न भये। सब लोगन बूझि स्वठाम गये॥
पुनि माधव मासमें आय रहै। कर जोरि कै सुन्दर बात कहै॥
महराति जबै निगिचाय रही। सपने जगदम्ब चेताय रही॥
शुभ राउर नाँव बताय रही। सब ठांव-ठिकान जताय रही॥
हौं हेरत हेरत आयों इतै। मोहिं राखिय हौं अब जाउँ कितै॥
दुहिता मम व्याहिय देवि कहै। कहि कै अस सो पद कंज गहै॥

दो० सुनत विनय सोचन लगे, पुनि बोले सकुचाय।
ब्याह बरेखी ना चहौं, अनत पधारिय पाय॥ १५॥

द्विज मानै नहीं धरना धरिकै। नाहिं खाय-पिये ससना करिकै॥
दुसरे दिन जब स्वीकार कियो। तब विप्र हठी जल अन्न लियो॥
घर जाय सोधाय के लग्न धरो। उपरोहित भेजि प्रशस्त करो॥

इतते पुरलोगन योग दिये। सब साज समान बरात किये॥
पन्द्रह सै पार तिरासि विषै। शुभ जेठ सुदी गुरु तेरस पै॥
अधिराति लगै जु फिरी भँवरी। दुलहा दुलही की पड़ी पँवरी॥
ललना मिलि कोहबर माहिं रसीं। वरनायक पंडित सो विहसीं॥
तिसरे दिन मांडवचार भयो। शुचिभक्ति सोदान-दहेजदयो॥

दो० विदा करा दुलही चले, पंडितराज महान।
आये निज पुर अरु किये, लौकिकचार विधान॥१६॥

पुर नारि जुरीं गुरुभौन गईं। दुलही मुख देखि निहाल भईं॥
हुलसीसुत देखेउ नारि छटा। मुख-इन्दु ते घूँघट कोर हटा॥
मन प्राण-प्रिया पर वारि दये। जस कौशिक मेनका देखि भये॥
दिन राति सदा रँग राते रहैं। सुख पाते रहैं ललचाते रहैं॥
शर वर्ष पुरस्मर चाव चये। पल ज्यों रसकेलि में बीत गये॥
नहिं जान दें आपु न जायकहीं। पल एक प्रिया बिनु चैन नहीं॥
दुखिया जननी मुख देखन को। पितु ग्राम सुआसिनिपेखनको॥
सह बन्धु गईं चुपके सो सती। बरखासन ग्राम हते जु पती॥
जब सांझ समय निज गेह गये। घर सून निहारि ससोच भये॥
तब दासि जनायउ सौं कै कै। निज बन्धु के संग गईं मैकै॥
सुनते उठिकै ससुराल चले। अति प्रेम प्रगाढ़ विशेष पले॥
कौनिउ विधि ते सरि पार किये। पहुँचे सब सोवत द्वार दिये॥

छंद

दै द्वार सोवहिं लोग नींद तुराइ गोहरावन लगै।
स्वर चीन्हि द्वारकपाट खोली झमकि भामिनि सगबगै॥
बोली बिहँसि बानी बिमल उपदेश सानी कामिनी।

कस बस चले प्रेमांध ज्यों नहिं सुधि अँधेरी यामिनी॥३॥

दो० हाड़-मांस को देह मम, तापर जितनी प्रीति।
तिसु आधो जो रामप्रति, अवशि मिटिहि भवभीति॥१७

सो० लाग वचन जिमि बान, तुरत फिरे बिरमें न छिन।
सोचेउ निज कल्यान, तब चित चढ़ेउ जो गुरु कहेउ५॥

दो० "नरहरि कंचन-कामिनी, रहिये इनते दूर।
जो चाहिय कल्यान निज, राम दरस भरि पूर"॥८॥

सो० लखि रुख तिय अकुलाय, बोली वचन सकोप तब।
त्याग न उचित कहाय, बिनु तिय मुख खरियाखचे॥६॥

उठि दौरि मनावन सार गयो। पिछु आये रह्यौ जब भोर भयो॥
नहिं फेरे फिरे फिरि आयो घरे। भगिनी निज मूर्च्छित देख्यो परे॥
मुर्च्छा जु हटी उठि बोली सती। पिय को उपदेशन आइ हती॥
पिय मोर पयान कियो वन को। हौं प्रान पठाउँ तजौं तनु को॥
कहिकै अस सो निज देह तजी। सुर लोक गई पति धर्म ध्वजी॥
शत पन्द्रह युक्त नवासि सरै। सु अषाढ़ बदी दसमीहुँ परै॥
बुध बासर धन्य सो धन्य घरी। उपदेसि सती तनु त्याग करी॥
भयो सोर कहैं कोउ सिद्ध मुनी। परमारथ बिन्दक तत्त्व गुनी॥
द्विजगेह में शारद देह धरी। रति रंग रमा रस राग हरी॥

दो० कोउ कह तिय की मुखनि ते, बोलेउ श्रीभगवान।
मोह निवारेउ भक्त कर, साहिब शील निधान॥१६॥

तुलसी-सुत तीरथराज गये। अरु मंजि त्रिवेनि कृतार्थ भये॥
गृहिवेष विसर्जन कीन्ह तहाँ। मुनिवेष सँवारि चले फफहाँ॥
गढ़ हेलि रु धेनुमती तमसा। पहुँचे रघुवीरपुरी सहसा॥

तहँवाँ चौमासकलौं बासिकै। प्रिय सन्त-अनन्त विभूरसिकै॥
चले वेगि पुरी कहँ धाम महा। विश्राम पचीसक बीच रहा॥
तिनमा दुइ ठाम प्रधान गुनो। वरदान रु शापकी बात सुनो॥
घड़ि चारि दुबौलिमें वास किये। हरिराम कुमारहिं शाप दिये॥
सो प्रसिद्ध सुप्रेत भयो तेहिते। हरिदर्शन आपु लही जेहिते॥
पुनि चारु कुँवरि वरदान दियो। जिन सन्त सुसेवा लियो रु कियो॥

दो० जगन्नाथ सुखधाम में, कछुक दिना करि वास।
लिखे वाल्मीकी स्वकर, जब तब लहि अवकास॥२०॥

रामेश्वर कहँ कीन्ह पयाना। तहँते द्वारावति जग जाना॥
बहुरि तहांते चलि हरषाई। बदरी धामहिं पहुँचे जाई॥
नारायण ऋषि व्यास सोहाये। दरस दिये मानस गुन गाये॥
तहँते अति दुर्गम पथ लयऊ। मानसरोवर कहँ चलिगयऊ॥
जियको लोभ तजै जो कोई। सो तहँ जाइ कृतारथ होई॥
तहँ करि दिव्य सन्त सत्संगा। जाते होवै भवरस भंगा॥
दिव्य सहाय पाय मुनिराई। जात रुपाचल देखेउ जाई॥
नीलाचल कर दर्शन कीन्हे। परम सुजान भुशुंडिहि चीन्हे॥
लौटि सरोवर पै पुनि आये। गिरि कैलास प्रदच्छिन लाये॥

दो० इमि करि तीर्थाटन सफल, निवसे भववन आय।
चौदह बरिस रु मासदस, सतरह दिवस बिताय॥२१॥

टिकिके तहँ चातुर्मास किये। नित रामकथा कहि हर्ष हिये॥
वनवासि सुसन्त सुनै नित सो। सुनि होहिं अनन्दित ते चितसों॥
वनमां इक पिप्पल रूख हतो। तिसु ऊपर प्रेत निवास छतो॥
जल शौच गिरावहिं तासु तरे। सोइ पानिय प्रेत पियास हरे॥

जब जानेउ सो कि अहैं मुनिये । जिनबालपने मोहि शापदिये ॥
तब एकदिना सो प्रतच्छ कह्यो । कहिये सो करौं जस भाव अह्यो ॥
हुलसीसुत बोलेउ मोरे मना । रघुनन्दन दर्शन को चहना ॥
सुनि प्रेत कह्यौ जु कथा सुनिबै । नित आवत अंजनिपूत अजै ॥
सबते प्रथमे सो तो आवहिं जू । सब लोगन पाछे सो जावहिं जू ॥

सो० वेष अमंगल धारि, कुष्ठी को वपु जानियहि ।
अवसर नीक विचारि, चरणगहियहठठानियहि ॥७॥

छंद

हठठानि तेहि पहिचानि मुनिवर विनय बहुविधि भाषेऊ ।
पद गहि न छाड़ेउ पवनसुत कह कहहु जो अभिलाषेऊ ॥
रघुवीर दर्शन मोहि कराइय मुनि कहेउ गद्गद वचन ।
तुम जाइ सेवहु चित्रकूट तहां दरस पैहहु चखन ॥ ४ ॥

दो० श्री हनुमन्त प्रसंग यह, विमल चरित विस्तार ।
लहेउ गोसाईं दरसरस, विदित सकल संसार ॥ २२ ॥

चित चेति चले चित्रकूट चितय । मन माहिं मनोरथ को उपचय ॥
जब सोचहिं आपन मंद कृती । पग पाछ पड़ै न रहैजु धृती ॥
सुधि आवत राम स्वभाव जबै । तब धावत मारग आतुर ह्वै ॥
इहि भांति गोसाईं तहां पहुँचै । किय आसन राम सुघाटहि पै ॥
इक बार प्रदच्छिन देन गये । तहँ देखत रूप अनूप भये ॥
युग राजकुमार सु अश्व चढ़ै । मृगया वन खेलन जात कढ़ै ॥
छवि सो लखि कै मन मोहेउ पै । अस को तनुधारि न जानि सकै ॥
हनुमन्त बतायउ भेद सबै । पछिताइ रहे ललचाइल वै ॥
तब धीरज दीन्हेउ वायुतनय । पुनि होइहि दरसन प्रातसमय ॥

दो० सुखद अमावस मौनिया, बुध सोरह सै सात।
जा बैठै तिसु घाट पै, विरही होतहि प्रात॥ २३॥

सो० प्रकटे राम सुजान, कहेउ देहु बाबा मलय।
शुक वपु धरि हनुमान, पढ़ेउ चेतावनि दोहरा॥ ८॥

दो० चित्रकूट के घाट पर, भइ सन्तन की भीर।
तुलसिदास चन्दन घिसें, तिलक देत रघुवीर॥ २४॥

छंद

रघुवीर छवि निरखन लगे बिसरी सबै सुधि देह की।
को घिसै चन्दन दृगन ते बहि चली सरित सनेह की॥
प्रभु कहेउ सो नाहिं चेतेउ स्वकर चंदन लै लिये।
दै तिलक रुचिर ललाट पै निज रूप अन्तर्हित किये॥ ५॥

दो० विरह व्यथा तलफत पड़े, मगन ध्यान इकतार।
रैनि जगायउ वायुसुत, दीन्ही दशा सुधार॥ २५॥

शुक पाठ पढ़ावत नारि नरा। करतल पर लै शुक को पिंजरा॥
हुलसीसुत भक्ति महामहिमा। तत्कालहिं छाय रही महि मां॥
दिन एक प्रदच्छिन कामद दै। पहुँचे सौमित्र पहाड़िहिं पै॥
तहँ श्वेतक सर्प पड़यो मगमें। सित गात मनोहर या जगमें॥
तिसु ओर विलोकि गोसाइँ कहै। चन्द्रोपम सुन्दर नाग अहै॥
हरि सृष्टि विचित्र कहै न बनै। निगमागम शारद शेष भनै॥
ऋषि दृष्टि पड़ै तिसु पाप गयो। तब पन्नग-ज्ञानि ललात भयो॥
मोहि छूइकै तारिय नाथ अबै। छुअतेहि गयो सो भुजंग अँथै॥
योगश्रिमुनी तहँ छीत भये। निज पूर्व कथा कहि वास लये॥

दो० यह प्रभाव मुनिनाथ कर, सुनि गुनि सन्त सुजान।
आवन लागे दरस हित, भीर भयो ऋषि थान ॥२६॥

बड़ि भीर निहारि गुफा में ढुके। बहिरन्तर हानि विचारि लुके॥
मुनि आवहिं योगि तपी रु यती। बिनु दर्शन जाहिं निरास अती॥
दरियानँद स्वामि हुँ आय रहे। निज आसन टेकि जमाय रहे॥
लघुशंका के हेतु गोसाइँ कढ़े। करजोरि सो स्वामि भये जु ठढ़े॥
कहे नाथ है होत अनीति बड़ी। छमिये कहिबो मम बात कड़ी॥
लघुशंका लगै बहिरात हैं जू। सुनि साधुगिरा छिपि जात हैं जू॥
दुख पावत सज्जन हैं तेहिते। बिनती हौं करौं सुनिये यहिते॥
हौं देव मचान बँधाय अबै। तेहि ऊपर आसन नाथ फबै॥
करि दर्शन होब निहाल सबै। सुठि सन्त समागम होइ जबै॥

दो० बिनती दरियानन्द की, मानि सजाय मचान।
बैठत दिनभर लहत सुख, साधक सिद्ध सुजान॥ २७॥

नित नव सत्संग उमाह बढ़ै। शुचि सन्त हृदय रसरंग चढ़ै॥
नित नित्य विहार हुँ देखत हैं। मृगया कर कौतुक पेखत हैं॥
वृन्दावन ते हरिवंश हितू। प्रियदासनवलनिजशिष्यभृतू॥
पठये तिन आय जोहार किये। गुरुदत्त सुपोथि सप्रेम दिये॥
यमुनाष्टक राधा सुधानिधि जू। अरु राधिक तंत्र महा विधि जू॥
अरु पाति दये हित-हाथ लिखी। सोरह सै नव जन्माष्टमि की॥
तेहि माहिं लिख्यो बिनती लहुरी। सोइ बात मुखागर सो कहुरी॥
रजनी महरास की आवत जू। चित मोर सदय ललचावत जू॥
रसिकै रस मों तनु-त्याग चहौं। मोहि आसिष देइय कुंज लहौं॥

सो० सुनि बिनती मुनि नाथ, एवमस्तु इति भाषेऊ।

तनु तजि भये सनाथ, नित्य निकुंज प्रवेश करि॥९॥
दो० संडीला ते आय कै, वसु स्वामी नँदलाल।
पढ़े राम रक्षा विवृति, जो भक्तन को ढाल॥ २८॥
षट मास रहै सत्संग लहै। चलती बिरियाँ कछु चिह्न चहै॥
दियो सालग्राम की मूर्त्ति भली॥निजहस्तलिखितकवचऔकमली
इमि यादव माधव वेणि उभय। चित्सुखकरुणेश आनंदसदय॥
तपसी सुमुरारि उघार यती। विरही भगवन्त सुभाग्यवती॥
विभवानँद देव दिनेश मिले। अरुदक्षिण देश के स्वामि पिले॥
सब रंग रँगे सत्संग पगे। अहमादि कुनींद सुषुप्त जगे॥
कहे धन्य गोसाइँ जु जन्म लये। लहि दर्शन हौं कृतकृत्य भये॥
दृग नीर ढरै नहिं बोल सरै। सब जाहिं सुप्रेम प्रमोद भरै॥
वसु संवत साधु समागम मों। कटिगो नहिं जानिपर्यो किमिधों॥
दो० सोरह सै सोरह लगै, कामद गिरि ढिग वास।
शुभ एकान्त प्रदेश महँ, आये सूर सुदास॥ २९॥
पठये गोकुलनाथ जी, कृष्ण रंग में बोरि।
दृग फेरत चित चातुरी, लीन्ह गोसाईं छोरि॥ ३०॥
कवि सूर दिखायउ सागर को। शुचि प्रेम कथा नट नागरको॥
पद द्वय पुनि गाय सुनाय रहै। पदपंकज पै सिर नाय कहै॥
अस आसिष देइय श्याम ढरैं। यहि कीरति मोरि दिगन्त चरै॥
सुनि कोमल बैन सुदादि दिये। पद-पोथि उठाइ लगाये हिये॥
कहै श्याम सदा रस चाखत हैं। रुचि सेवक की हरि राखत हैं॥
तनिको नहिं संशय है यहि मा। श्रुतिशेष बखानत हैं महिमा॥
दिन सात रहै सत्संग पगै। पदकंज गहै जब जान लगै॥

गहि बांह गोसाइँ प्रबोध किये । पुनि गोकुलनाथ को पत्र दिये ॥
लै पाति गये जब सूर कवी । उर में पधराय के श्याम छवी ॥
दो० तब आयो मेवाड़ ते, विप्र नाम सुखपाल ।
मीरा बाई पत्रिका, लायो प्रेम प्रवाल॥३१॥
पढ़ि पाती उत्तर लिखे, गीत कवित्त बनाय ।
सब तजि हरि भजिबो भलो, कहि दिय विप्र पठाय॥३२॥
तड़के इक बालक आन लग्यो । सुठि सुन्दर कंठसों गान लग्यो ॥
तिसु गान पै रीझि गोसाइँ गये । लिखि दीन्ह तबै पद चारि नये॥
करि कंठ सुनायउ दूजे दिना । अरि जायसो नूतन गीत विना ॥
मिशु याहि बनावन गीत लगै । उर भीतर सुन्दर भाव जगै ॥
जब सोरह सै बसु बीस चढ़्यो । पदजोरिसबैशुचिग्रन्थ गढ़्यो ॥
तिसु रामगितावलि नाम धर्यो ।अरुकृष्णगितावलिरांचिसर्यो॥
दोउ ग्रन्थ सुधारि लिखै रुचि सों । हनुमन्तहिं दीन सुनाय जिसों ॥
तब मारुति ह्वै कै प्रसन्न कह्यौ । करि प्यान अवधपुर जाइ रह्यौ॥
इमि इष्ट को आयसु पाइ चले । बिरमे सुठि तीरथराज थले ॥
दो० तेहि अवसर उत्तम परब, लागो मकर नहान ।
योगी तपी यती सती, जुरै सयान अजान ॥ ३३ ॥
तेहि पर्व ते पाछे गये दिन छै । वट छांह तरे जु लख्यो मुनि द्वै ॥
तपपुंज दोऊ मुख कांति तपै । छवि छाय छपाकर छंद छपै ॥
करि दंड प्रणाम सुदूर हिंते । करजोरि कै ठाढ़ भये तहिंते ॥
मुनि सैन सों एक हँकारि लियो । अपने ढिग आसन चारु दियो॥
तेहि टारि कै भूमि में बैठि गये । परिचय निज दै परिचाय लये ॥
सोइ रामकथा तहँ होत रह्यौ । गुरु शूकरखेत में जौन कह्यौ ॥

विस्मय युत बूझेउ गुप्त मता ।कहिजागबलिकमुनिदीन्हबता॥
हर रंचि भवानिहिं दीन्ह सोई । पुनिदीन्ह भुशुण्डिहिं तत्तगोई॥
हौं जाइ भुशुण्डिते ताहि लहेउँ । भरद्वाज मुनी प्रति आइ कहेउँ ॥

दो० यहि विधि मुनि परितोष लहि, पद गहिपाय प्रसाद ।
सुनै युगल मुनिवर्य कर, तहाँ विमलसंवाद॥३४॥

तेहि ठांव गये जब दूजे दिना । थल सून निहारु मुनीस विना ॥
वट छांह न सो नहिं पर्णकुटी । मन विस्मय बाढ़ेउ मर्म पुटी ॥
उर राखि उभय मुनि शील चले । हरि प्रेरित काशि की ओर ढले॥
कछु दूरि गये सुधि आइ जबै । मन सोचत का करिये जु अबै ॥
जो भया सो भया अब याहि सधै । हर दर्शन कै चलि हौं अवधै॥
मन ठीक किये मग आगु बढ़े । चलिकै पुनि सुरसरि तीरकढ़े ॥
तब तीरहिं तीर चले चित दे । भइसांझजहां सो तहां टिकिगे॥
दिग वारि पुरा बिच सीतामढ़ी । तहँ आसन डारत वृत्ति चढ़ी ॥
नहिं भूख न नींद विछिप्त दशा । उर पूरब जन्म प्रसंग बसा ॥

दो० सीतावटतर तीन दिन, बसि सुकवित्त बनाय ।
बंदि छोड़ावत बिंध नृप, पहुँचे काशी जाय ॥३५॥
भगत शिरोमणि घाटपै, विप्रगेह करि वास ।
रामविमल यश कहि चले, उपज्योहृदयहुलास॥३६॥

दिन में जितनी रचना रचते । निसि माहिं सुसंचित नाबचते॥
यह लोपक्रिया प्रतिद्यौस सरै । करिये सो कहा नहिं बूझि परै ॥
अठयें दिन शम्भु दिये सपना । निजबोलिमेंकाव्यकरो अपना॥
उचटी निंदिया उठि बैठु मुनी । उर गूँजि रह्यो सपने की धुनी ॥
प्रगटे शिव संग भवानि लिये । मुनि आठहु अंग प्रणाम किये॥

शिव भाषेउ भाषा मेंकाव्यरचो। सुर वानि केपीछे नतातपचो॥
सब कर हित होइ सोई करिये। अरु पूर्व प्रथा मत आचरिये॥
तुम जाइ अवधपुर वास करो। तहँई निज काव्य प्रकाश करो॥
ममपुण्य प्रसाद सोंकाव्य-कला। होइ है समसामऋचा सफला॥

सो० कहि अस शम्भु भवानि, अन्तर्धान भये तुरत।
आपन भाग्य बखानि, चले गोसाईं अवधपुर॥१०॥

दो० जेहि दिन साहि सभानमें, उदय लह्यो सन्मान।
तेहि दिन पहुँचे अवध में, श्रीगोसाईं भगवान॥३७॥

सरयू करि मज्जन गव दिन में। विचरे पुलि नारन वीथिन में॥
एक सन्त मिले कहने सो लगे। थल रम्य लखैं महवीरि लगे॥
लै संग सो ठाम दिखायो भले। वटकी विटपावलि पुण्य थले॥
तिन मां वट एक विशाल थही। तिसु मूल में वेदिका सोहि रही॥
तिसु ऊपर बैठु सिधासन से। इक सिद्ध प्रसिद्ध हुतासन से॥
थल देखि लोभायो गोसाईं मना। बसिये यहि ठाँव कुटीर बना॥
जब सिद्ध के सन्निधि मों गुदरे। तजि आसन सो जय जय उचरे॥
सो कह्यो गुरु मोर निदेश दियो। तेहि कारन हौं यह वास लियो॥
गुरु मोर बतायउ मर्म सबै। सो तो देखत हौं परतच्छ अबै॥

कुं० ममगुरु कहेउ किकरहि किन सिद्ध पृष्ठ थल वास।
कछु दिन बीते कहहिंगे हरियश तुलसीदास॥
हरियश तुलसीदास कहहिंगे यहि थल आई।
आदि कवी अवतार वायुनन्दन बल पाई॥
राजराज वट रोपि दियो मरजाद समूचम।
बसि यहँ ठाहर ठाटु मानि अति हित शासन मम॥१॥

सो० जब ऐहैं यहि ठाम, हुलसीसुत तिसु हेतु हित।
सौंपि कुटी आराम, तनु तजि ऐहहु मम निकट॥११॥

उपदेश गुरू मोहि नीक लग्यो। बहु जन्म पुरातन पुण्य जग्यो॥
बसिकै रसिकै तपिकै चउरी। हौं जोहत बाट रह्यौं रउरी॥
अब राजिय गाजिय नाथ यहाँ। हौं जाब बसे गुरु मोर जहाँ॥
कहिके अस वेदिका ते उतर्‍यो। सिर नाइ सिधारेउ दूरि पर्‍यो॥
तहँ आसन मारिकै ध्यान धर्‍यौ। तिसु योग हुतासन गात जर्‍यौ॥
यह कौतुक देखि गोसाईं कहैं। धनुधारि! तेरी बलिहारि अहैं॥
निवसे तहँ सौख्य सुपास लहैं। दृढ़ संयम जो मम योग गहैं॥
पय पान करैं सोउ एक समय। रघुवीर भरोस न काहुक भय॥
युग वत्सर बीते न वृत्ति डग्यो। इकतीस को संवत आइ लग्यो॥

दो० रामजन्म तिथि बार सब, जस त्रेता महँ भास।
तस यकतीसा महँ जुरै, योग लग्न ग्रह रास॥३८॥
नौमी मंगल वार शुभ, प्रात समय हनुमान।
प्रगटि प्रथम अभिषेक किय, करन जगत कल्यान॥३९॥
हर, गौरी, गनपति, गिरा, नारद, शेष सुजान।
मंगलमय आशिष दिये, रवि, कवि, गुरु गिर्वान॥४०॥

सो० यहि विधि भा आरम्भ, रामचरितमानस विमल।
सुनत मिटत मद दम्भ, कामादिक संशय सकल॥१२॥

दुइ वत्सर सातके मास परे। दिन छब्बिस मांझ सो पूर करे॥
तैंतीस को संवत औ मगसर। शुभ द्यौस सुराम विवाहहि पर॥
सुठि सप्त जहाज तयार भयो। भवसागर पार उतारन को॥
पाखण्ड प्रपञ्च बहावन को। शुचि सात्त्विक धर्म चलावन को॥

कलिपाप कलाप नशावन को। हरिभक्ति छटा दरसावन को॥
मत वाद विवाद मिटावन को। अरु प्रेम को पाठ पढ़ावन को॥
सन्तन चित चाव चढ़ावन को। सज्जन उर मोद बढ़ावन को॥
हरिरस हर बस समुझावन को। श्रुति सम्मत मार्ग सुझावन को॥
युत सप्त सोपान समाप्त भयो। सदग्रन्थ बन्यो सुप्रबन्ध नयो॥

दो० महिसुत बासर मध्य दिन, शुभमिति तत्सत कूल।
सुर समूह जय जय किये, हर्षित वर्षे फूल॥ ४१॥
जेहि छिन यह आरम्भ भो, तेहि छिन पूरेउ पूर।
निर्बल मानव लेखनी, खींचि लियो अति दूर॥ ४२॥
पांच पात गनपति लिखे, दिव्य लेखनी चाल।
सत, शिव, नाग, अरुद्यू, दिशप, लोकगयउतत्काल॥४३॥
सब के मानस में बसेउ, मानस रामचरित्र।
बन्दत ऋषि-कवि पदकमल, मन क्रम वचन पवित्र॥४४॥
बन्दौं तुलसी के चरण, जिन कीन्हों जग काज।
कलि समुद्र बूड़त लख्यो, प्रगटेउ सप्त जहाज॥४५॥
परम मधुर पावन करनि, चार पदारथ दानि।
तुलसीकृत रघुपति कथा, कै सुरसरि रसखानि॥४६॥

सो० प्रगटे श्रीहनुमान, अथ सों इति लौं सब सुनै।
दिये सुभग वरदान, कीरति त्रिभुवन वश करी॥१३॥

मिथिला के सुसन्त सुजान हते। मिथिलाधिप भाव पगे रहते॥
शुचि नाम रुपारुण स्वामि जुतो। तेहि अवसर औधमें आयो हुतो॥
प्रथमै यह मानस तेई सुनै। तिनहीं अधिकारी गोसाईं गुनै॥
स्वामिनंद सुलालको शिष्यपुनी। तिसु नाम दयाल सुदास गुनी॥

लिखि कैसोइ पोथि स्वठामगयो। गुरु के ढिग जाय सुनाय दयो॥
यमुना तट पै त्रय वत्सर लौं। रस खानहिं जाइ सुनावत भो॥
तब ते बहु संख्यक पात लिखै। कछु लोगन औ निजहाथ ऋषै॥
मुकुता मणि दास जु आयो हतो। हरि शयनको गीत सुनायो हतो॥
तिसु भावहि पै मुनि रीझि गये। पल मों पल भांजत सिद्धि दये॥
दो० तब हरि अनुशासन लहै, पहुँचे काशी जाय।
विश्वनाथ जगदम्ब प्रति, पोथी दियो सुनाय॥ ४७॥

छंद

पोथी पाठ समाप्त कै के धरे, शिवलिङ्ग ढिग रात में।
मूरख पंडित सिद्ध तापस जुरे, जबपट खुलेउ प्रात में॥
देखिन तिरषित दृष्टिते सब जने, कीन्ही सही शंकरम्।
दिव्याक्षर सों लिखो पढ़े धुनि सुने, "सत्यं शिवं सुन्दरम्" ६॥
शिव की नगरी रसरंग भरी। यह लीला जु पाटि गई सगरी॥
हरषे नर नारि जोहारि किये। जय जय धुनि बोलि बलैयाँ लिये॥
पै पंडित लोगन सोच भयो। सब मान महातम जीव गयो॥
पढ़ि हैं यह पोथि प्रसादमयी। तब पूछिहैं कौन हमें मनयी॥
दल बांधि ते निन्दत बागत भे। सुर बानि सराहत पागत भे॥
कोउ ग्रन्थ चोरावन हेतु रचे। फरफन्द अनेक प्रपञ्च पचे॥
निधुआ सिखुआ युग चोरगये। रखवार विलोकि निहाल भये॥
तेहि पूछे गोसाईं ते कौन धुही। युग श्यामल गौर धरे धनुही॥
सुनि वैन भरैं जल नैन कहै। तुम धन्य हते हरि दर्श लहै॥
दो० तजि कुकरम तस्कर तरै, दिय सब वस्तु लुटाय।
जाय धरे टोडर सदन, पोथी यतन कराय॥ ४८॥

पुनि दूसर पात लिखै रुचि सों । तेहिते लिपिपैलिपि होन लग्यो॥
दिन दून प्रचार बढ़्यो लखि कै । सब पंडित हारे हिया झाँखि कै॥
तब मिश्र बटेसर तान्त्रिक हीं । दुख दाह सुधीगन रोय कही ॥
तिन मारन केर प्रयोग कियो । हठि भैरव प्रेरि पठाय दियो ॥
हनुमन्त से रक्षक देखि डरे । उलिटे सुबटेसर प्रान हरे ॥
तब हारि चले दल को सजि कै । मधुसूदन सरस्वति के मठ पै ॥
कहै कीन्ह प्रमाण महेश सही । किसु कोटिको है सो न बात कही॥
श्रुति शास्त्र पुराण इतिहास इये । कोहिके समकक्ष तिसै कहिये ॥
यति राज कहै मँगवाउब जू । तब पोथि विलोकि बताउब जू ॥

दो० ते मँगाय पोथी पढ़ै, उपज्यो परमानन्द ।
फेरि दिये लिखि श्लोक यह, जयति सच्चिदानंद॥४६॥

श्लो० आनन्दकानने ह्यस्मिन् जंगमस्तुलसीतरुः ।
कविता मञ्जरी भाति रामभ्रमरभूषिता ॥

जब पंडित आये कहै तिन ते । किन बूझियबात सदा शिव से॥
निगमागम शास्त्र पुराण सबै । क्रम ते धरि मानस नीचे फबै ॥
जब होत बिहान खुलेउ पट तो । सब टूटि परे तेहि देखन को ॥
लखि वेद के ऊपर मानसहीं । सब पंडित लाज गरे तितहीं ॥
चरणों पै पड़े चरणोदक लै । अपराध कराइ क्षमा घर गै ॥
नदिया को सुपंडित दत्त रवी । सब शास्त्रविशारदआशुकवी ॥
मुनि ते हठि बाद विवाद कियो । अरु हारि विषादबढ़ायोहियो ॥
जब न्हान गोसाइँ चले मठ ते । तब मारन हेतु गयो लठ ले ॥
हनुमन्त सुरक्षक देखि भज्यो । अपनी करनी पर आपु लज्यो ॥
पुनि जाइ गोसाइँ रिझाय लियो । वर हेतु सुधीहठ भूरिकियो ॥

छंद

मांगेउ सो वर तजिये पुरी मुनि विवश भे वर के दिये।
'काशिनाथ कहि निवरत हौं' कवित्त बनाय दृढ़ निश्चय किये॥
सो लिखि धरे हर मन्दिरहिं प्रस्थान दक्षिण दिशि किये।
शिव दै दरस समुझाय फेरे क्षुभित मन धीरज दिये॥ ७॥

दो० मुनि प्रस्थान मुदित भयो, गयो दरस हित धीर।
बन्द भयो पट धुनि भई, कोप सहित गम्भीर॥ ५०॥

सो० जाइ गोसाइँ मनाउ, पग परि बहु विधि विनय करि।
पुरि महँ लाइ बसाउ, नातो होइहि नाश तब॥ १४॥

सुनि टोडर आय कियो बिनती। मुनि मानिय सेवक की मिनती॥
प्रिय घाट असीपर भौन नयो। बनिकै सह घाट तयार भयो॥
बसिकै सुखसों सुख देइयजू। पदकंज सदा हम सेइय जू॥
सुख मानि गये तेहि ठाम बसै। रघुवीर गुणावलि माहिं रसै॥
कलि आयउ राति कृपान लिये। मुनिकहँ बहुभांति से त्रास दिये॥
सो कह्यौ जल बोरहु पोथिनिजै। न तो दाढ़िहौं ताड़िहौं चेतु अबै॥
कहिके अस सो जु सिधारो जबै। सुनि ध्यान धरेउ हरि हेतु तबै॥
हनुमन्त कहेउ कलिना मनि है। मम वरजे सो वैर महाठनिहै॥
लिखिकै विनयावलि देहु मोही। तब दण्ड दियाउब तात ओही॥

दो० विदित राम विनयावली, मुनि तब निर्मित कीन्ह।
मुनि तेहि साखी युतप्रभू, मुनिहिं अभयकर दीन्ह ५१॥

मिथिलापुर हेतु पयान किये। सुकृती जन को सुख शान्ति दिये॥
भृगु आश्रम में दिन चारि रहे। करहीन बुआ कर पाप दहे॥
दिन एक बसे मुनि हंसपुरा। परसी को सुहाग दिये बहुरा॥

गऊघाट में राउ गँभीर धरे। दुइ बासर लौं तहँवाँ ठहरे॥
ब्रह्मेश सुदर्शन कै के चले। पुनि कांत ब्रह्मपुर मां निकले॥
सँवरूसुत मांगरु ग्वाल हतो। दुहि दूध दियो सुर साधु रतो॥
वर दीन तजे चोरहाई सहूँ। निर्वंश न होवहुगे कबहूँ॥
तब बेलापतार में आय रहे। तहँ दास धनी निज कष्ट कहे॥

छंद

कहे कष्ट आपन काल्हि जाइहि प्रान मम पातक बयों।
मूसहिं खवायों भोग कहि कहि खात हरि सौंहें कियों॥
रघुनाथसिंह जानेउ दगा करि कोप सो बोलेउ मुने॥
नहिं खाहिं ठाकुर सामुहे मम तोपि वध निश्चय गुने॥८॥

सो० मुनिवर धीरज दीन्ह, कियो रसोई साधु तब।
सन्मुख भोजन कीन्ह, ठाकुर लखि इमि ऋषि कहेउ १५

दो० तुलसी झूठे भगत की, पति राखत भगवान।
जैसे मूर्ख उपरोहितहिं, देत दान जजमान॥ ५२॥

निज गेह पवित्र करावन को। लै गो मुनि को नरनायक सो॥
तहँ भक्त सुगोविंद मिश्र मिले। जिसु दृष्टि ते लोह घना पिघिले॥
मुनि गांव के नाँव में फेर करे। रघुनाथ पुरा तिसु नाम धरे॥
तहँ ते चलिकै विचरे विचरे। ऋषि हरिहरखेत में जा पधरे॥
पुनि संगम मंजि चले सपदी। नियराये विदेहपुरी छपदी॥
धरि बालिकारूप विदेहलली। बहराय कै खीर खवाय चली॥
जब जानेउ मर्म कहा कहिये। मनही मन सोचि कृपा रहिये॥
द्विज लोगन हाला के घेरि रहै। अरु आपन घोर विपत्ति कहै॥
छत सूबा नवाब बड़ो रगरी। सो तो बारह गाँव की वृत्ति हरी॥

दो० दया लागि कर्त्तव्य गुनि, सुमिरे वायुकुमार।

दण्डित करि बहुरायऊ, सुखयुत द्विज परिवार ॥ ५३ ॥
मिथिलाते काशी गये चालिस संवत लाग ।
दोहावलि संग्रह किये, सहित विमल अनुराग ॥ ५४ ॥
लिखे वाल्मीकी बहुरि, इकतालिस के मांहि ।
मगसर सुदि सतिमी रवौ, पाठ करन हित ताहि ॥५५॥
माधव सित सिय जन्म तिथि, ब्यालिस संवत बीच ।
सत्सैया वरणै लगै, प्रेम वारि ते सींच ॥ ५६ ॥
सो० उतरु सनीचरि मीन, मरी परी काशीपुरी ।
लोगन ह्वै अति दीन, जाइ पुकारे ऋषि निकट॥ १६॥
दो० करुणामय मुनि सुनि व्यथा, तंत्र कवित्त बनाय ।
करुणानिधि सों विनय करि, दीन्ही मरी भगाय॥५७॥
कवि केशवदास बड़े रसिया । घनश्याम सुकुल नभके बसिया॥
कवि जानि के दर्शन हेतु गये । रहि बाहिर सूचन भेजि दये ॥
सुनिकै जुगोसाईं कहै इतनो । कवि प्राकृत केशव आवन दो ॥
फिरिगे भट केशव सो सुनिकै । निज तुच्छता आपुइ ते गुनिकै ॥
जब सेवक टेरेउ गे कहिकै । हौं भेंटिहौं कालि विनयगहिकै ॥
घनश्याम रहै घासिराम रहै । बलभद्र रहै विसराम लहै ॥
रचि राम सुचन्द्रिका रातिहिमें । जुरै केशव जू असि घाटिहिमें ॥
सत्संग जम्यो रस रंग मच्यो । दोउप्राकृतदिव्य विभूति खच्यो॥
मिटि केशव को संकोच गयो । उर भीतर प्रीति की रीति रयो ॥
दो० आदिल शाही राज के, भाजक दान बनेत ।
दत्तात्रेय सुविप्रवर, आये ऋषय निकेत ॥ ५८ ॥
करि पूजा, आशिष लहै, मांगे पुण्य प्रसाद ।

लिखित वाल्मीकी स्वकर, दिये सहित अह्लाद ॥ ५९ ॥
अमरनाथ योगी तिया, वैरागी हरि लीन।
ताते कोपि तिनहिं रहित, कंठी माला कीन ॥६०॥
मच्यो कोलाहल साधुसब, आये मुनिवर पास।
फेरि मिल्यो सो आसननि, ऋषयकृपाअनयास॥६१॥
दो० आयो सिद्ध अघोरिया, अलख जगावत द्वार।
छिन महँ सिद्धाई हरी, उपदेशेउ श्रुति सार ॥ ६२ ॥
निमिषार को विप्र सुधर्मरता। वनखंडि सुनाम विमोह गता ॥
सब तीरथ लुप्तहिं चाहु थपै। तिसु हेतु सदाशिव मंत्र जपै ॥
इक प्रेत धना ढिग ठाढ़ भयो। बहु द्रव्य गड़ो सो दिखाइ दयो॥
सो कह्यो धन लै शुभ काज सरो। यहि योनि ते मोर उबार करो ॥
मन हर्षित विप्र कह्यो मोहि कां। चौधाम घुमाय सुतीरथ मां ॥
तब काशि गुसाइँ के तीर चलो। तिसु दर्शन होइ तुम्हार भलो ॥
सुख मानि कै तै सोइ प्रेत कियो। नभ मांझ असीपर छेंकछियो ॥
जन सोर मच्यो बहु लोग जुरै। सब कौतुक देखहि अंग फुरै ॥
निज आश्रम ते कढ़ि आये मुनी। नभते भयो जय जयकार धुनी॥
दो० दिव्य रूप धरि यान चढ़ि, प्रेत गयो हरिधाम।
तुलसी दरश प्रताप ते, सो भयो विधिवाम ॥६३॥
वनखंडी महि पै गिर्यो, पग छुइ कियो प्रणाम।
मुनिसनसबन्यवराकह्यो, बसेउ रसेउ तेहि ठाम ॥६४॥
तासुविनयसुनिमुनिचले, तीरथ थापन काज।
पहुँचे अवधहिं पांच दिन, तहां टिके ऋषिराज॥६५॥
दै रामगीतावलि गायक को। जे गावहिं यश रघुनायक को ॥

मनबोध तिवारिहिं औध छटा। सब कंचन मय वन भूमि अटा॥
दिखरा के चले रघनाही टिके। पुनि शूकर खेत में जाय थिके॥
सियावार सुगाँव में वास लिये। तहँ सीता सुकूप को पाथ पिये॥
पहुँचे लखनैपुर मोद भरे। अरु धेनुमती तट पै उतरे॥
कहुँ दीनन को प्रतिपाल करैं। कहुँ साधुन के मन मोद भरैं॥
कहुँ लखनलाल को चरित बचैं। कहुँ प्रेम मगन ह्वै आपु नचैं॥
कहुँ रामायन कल गान सचैं। उत्साह कोलाहल भूरि मचैं॥
कहुँ आरत जन को ताप हरैं। कहुँ अज्ञानिन उर ज्ञान धरैं॥

दो० निर्धन भाट दमोदरहिं, आशिष दै कवि कीन।
लहेउ विपुल धनमानबहु, भा कविकला प्रवीन॥६६॥
तहँ ते मलिहाबाद में, आय सन्त सिरताज।
रामायण निजकृत दिये, व्रजवल्लभ भटराज॥६७॥
पुनि अनन्य माधव मिले, कोटरा ग्रामहिं जाय।
माता प्रति शिक्षा सुने, भक्ति दियेबतलाय॥६८॥

पुनि जाय बिठूर में रैनि बसे। सरि मज्जन पांक में जाइ धसे॥
गहि बांह निकारेउ जन्हुसुता। तन तायो जरा न रही जु बुता॥
तहँते चलि जाय सँडीले परे। गउरीशंकर गृह माथ धरे॥
कहे या घर में लीन्हे जन्म पखा। मनसूखा स्वयं श्रीकृष्ण सखा॥
कछुकाल गये सोइ जन्म धर्यो। वंशीधर ताकर नाम पर्यो॥
कवि भो मुनिरव उपदेश कियो। पद रास सुने तनु त्याग दियो॥
तेहि व्योम विमान पै जात लख्यो। हलुवाइ सुसिद्ध प्रवीन मर्यो॥
सत्संगिन देखि निहाल भये। उपदेश सनातन पूर लये॥

दो० संडीले ते मुनि चले, मग ठाकुर क्षितिपाल।

न मन कियो नहिं मद मतो, तुरत भयो कंगाल॥६९॥
सो० विप्रन किय अपमान, ताते ते निर्धन भये।
कैथन किय सन्मान, सुखी भये धन वंश लहि॥७७॥
दो० जुरै जुलाहे भेंट धरि, लहै विपुल धन धान्य।
पहुँचे नैमिष वन मुनी, सर्व तंत्र सम्मान्य॥७०॥
सोधि सकल तीरथ थपै, किय त्रयमास निवास।
मिले पिहानी के सुकुल, सम्बत लगु उनचास॥७१॥
खैराबाद को सिद्ध प्रवीन घरे। मुनि आपुइ योग ते जाइ परे॥
करि ताहि निहाल चले मिसरिष। सँगमें वन खंडि दुचारिक सिष॥
पुनि नाव चढ़े सुख सों विचरे। पुर राम सुनै तुरतै उतरे॥
नृप सेवक टंटा बेसाहि रहे। सब मालमता तजि राह गहे॥
सिंहराम सुन्यो पग दौरि गह्यो। करिके जु विनय पद टेकि रह्यो॥
तब लौटि परे तिसु धाम बसे। हनुमन्तहिं थापि तहाँ विलसे॥
वंशीवट नाम धर्यो वटरय। मगसर सुदि पंचमी रासरचय॥
वृन्दावन में तहँते जु गये। सुठि राम सुघाट पै वास लये॥
बड़ धूम मचो शुचि सन्त घुरे। मुनि दर्शन को नर नारि जुरे॥
दो० स्वामी नाभा ढिग गये, ते किय बहु सम्मान।
उच्चासन पधराइ मुनि, पूजे सहित विधान॥७२॥
विप्र सन्त नाभा सहित, हरि दर्शन के हेतु।
गये गोसाईं मुदित मन, मोहन मदन निकेत॥७३॥
राम उपासक जानि प्रभु, तुरत धरे धनुबान।
दर्शन दिये सनाथ किय, भक्तबछल भगवान॥७४॥
बरसाने में लीला सो व्यापि गई। मुनि आसन पै बड़ि भीर भई॥

कछु कृष्ण उपासक द्वेष भरै। धनुबान धरे पर मोह सरै॥
तिनको समुझाये सुतत्त्व महा। जनको प्रण राम न राख्यो कहा॥
शुभ दक्षिण देश से जात हतो। हरि मूरति अवधहिं थापनको॥
विश्राम भयो यमुनातट पै। लखि मूरति मोहे विप्र उदै॥
सो चहो हरि विग्रह वाईं थपै। बिनती किय जाइ गोसाइहिं पै॥
न उठाये उठे जब सो प्रतिमा। तब थापित कीन्ह तहें जिजिमां॥
तिसु नाम कौसिल्या नन्दन जू। मुनिराज धरै जग बन्दन जू॥
नंददास कनौजिया प्रेम मढ़े। जिन शेष सनातन तीर पढ़े॥
शिक्षा गुरु बन्धु भये तेहिते। अतिप्रेमसों आय मिले यहिते॥

दो० हित सुत गोपीनाथ प्रति, महिमा अवध बखानि।
जेहि नहिं ठाँव-ठिकान कहुँ, तिनहिं बसावत आनि ७५॥
फेरि अमनिया दिये पुनि, सखरा ताहि बताय।
हलवाई बनिकन सदन, बालकृष्ण दिखराय॥ ७६॥

सो० इमि लीला दरसाय, भक्तन उर आनन्द भरि।
चित्रकूट महँ जाय, किये कछुक दिन वास तहँ॥ १८॥

सतकाम सुविप्र गोसाइँ लगे। दीक्षाहित आयो सुवृत्ति जगे॥
लखि कामविकार न शिष्य किये। टिकिगो तहँ सो हठठानि हिये॥
जब रात में रानि कदम्ब लता। आइ तासु विलोकन सुन्दरता॥
तिन दीपक बाति बढ़ाय लियो। लखिकै मुनि सुन्दर सीख दियो॥
सो विप्र लजाइ कै पांय परयो। करिकै मुनि छोह विकार हर्यो॥
पुनि विप्र दरिद्र महाजलपा। मंदाकिनि डूबन हेतु चला॥
तिसु प्राण बचावन हेतु ऋषय। सुठिदारिदमोचशिला प्रगटय॥
पुनि साहि खवास पठायउ जू। मुनिराजहिं दिल्ली बुलायउ जू॥

दो० चले यमुन तट नृप तिलक, साधु कियो सरनाम।
राधा बल्लभ भक्ति दिय, रीझे श्यामा श्याम॥
सो० उड़ छै केशव दास, प्रेत हते घेरे मुनिहिं।
उधरे बिनाहिं प्रयास, चढ़ि विमान स्वर्गहिं गयो॥
चरवारि के ठाकुर की दुहिता। जिसु सुन्दरता पै जग मुहिता॥
इक नारिहिते तिसु ब्याह भयो। जब जानेउ दारुण दाह भयो॥
वर की जननी जनमावत ही। सो प्रसिद्ध कियो तेहि पुत्र कही॥
अनुकूलहिं साज समान कियो। जे जानत भे तिहि पूजि दियो॥
यहि कारन धोखा भयो बहुतै। अब रोअत मींजत हाथ सबै॥
तिन घेरे दया लगि सन्त हिये। तिसु हेतु नवाह्निक पाठ किये॥
विश्राम लगायो सो जानिय जू। तिसु शब्द प्रथम यहँ आनिय जू॥
हिय, सत, अरु कीन्ह रुश्याम लगा। औ राम शैल पुनि हारि पगा॥
कह मारुत सुत, जहँ तहँ, पुरयं। इति पाठ नवाह्निक ठाम अयं॥

दो० नारी ते नर होइ गयो, करतहि पाठ विराम।
पुलकित जय तुलसी कहै, जय जय सीताराम॥ ७८॥
तहँ ते पँचयें दिन मुनी, पहुँचे दिल्ली जाय।
खबरिपाय तुरतहिंनृपति, लिय दरबार बुलाय॥ ७९॥
दिल्लीपति बिनती करी, दिखरावहु करमात।
मुकरि गये बन्दी किये, कीन्हे कपि उत्पात॥ ८०॥
बेगम को पट फारेऊ, नगन भईं सब बाम।
हाहाकार मच्यो महल, पटको नृपहिं धड़ाम॥ ८१॥
मुनिहिंमुक्ततछनकिये, क्षमाऽपराध कराय।
बिदा कीन्ह सन्मान युत, पीनस पै पधराय॥ ८२॥

चलि दिल्लीते आये महावनमें। निशि वास किये जु अहीरन में॥
इक ग्वार भगीरथ पै दुरिगे। तेहि सिद्ध सुसन्त बनावत भे॥
दसयें दिन औधहिं आय रहे। भरि पाख तहां सुसुताय रहे॥
हरिदास सुभक्त सुगीत रयो। तेहि मां कछु शब्द अशुद्ध भयो॥
सुधराये मुनी पै न बोध भयो। तिसु कीर्त्तन में अवरोध भयो॥
सपने मुनि ते रघुवीर कह्यो। नहिं शुद्ध अशुद्ध सुभाव गह्यो॥
तब जाइ मुनी तिसु भाव भरो। जस गावत हौं तस गाया करो॥
सुनि बालचरित्र अनन्दित ह्वै। मुनि तुष्ट किये सुपटम्बर दै॥

दो॰ देव मुरारी भेंट मिलि, सहित मलूकादास।
पहुँचे काशी में ऋषय, किये अखण्ड निवास॥८३॥

शुचि माघ में गंग नहाय हते। सरि भीतर मंत्र महा जपते॥
तनु वृद्ध सो कांपत रोम अड़े। गनिका रहि देखत तीर खड़े॥
कढ़िकै मुनि सींचेउ वस्त्र धरे। दुइ बुंद सोई गनिका पै परे॥
वेश्या मन में निर्वेद जगो। बहुदृश्य निरय दिखरान लगो॥
सब पाप प्रपञ्च से दूर भगी। उपदेश ले हरिगुन गान लगी॥
हरिदत्त सु विप्र दरिद्र महा। तिसु गंग के पार में बास रहा॥
मुनिके ढिग आय विपत्ति कही। जस दीन दशा घर केर रही॥
ऋषि अस्तुति गंग बनायकरी। सुरसरि दै भूमि विपत्ति हरी॥

दो॰ निन्दक मुनि अरु भक्तिपथ, भुलई साहु कलार।
निधन भयउ टिकठी धरे, लैगे फूँकन हार॥८४॥
तासु तिया रोवत चली, मुनिढिग नायउसीस।
सदा सोहागिन रहहु तुम, मुनिवर दीन्ह असीस॥८५॥
बिलखिकही सो निजदशा, शव मुनि लीन्ह मँगाय।

चरणामृत मुख देइकै, तुरतै दिये जिआय ॥ ८६ ॥
तेहि बासर ते मुनि नेम लिये। अरु बाहर बैठब त्याग दिये ॥
रहे तीन कुमार बड़े सुकृती। मुनि चरनन में तिनकी भगती ॥
ऋषिकेश रह्यौ मनिकर्निका पै। विश्वनाथ के मन्दिर शांतिपदै ॥
अनपूर्णा में दाता दीन रहै। रहनी गहनी सम साम गहै ॥
मुनि दर्शनको नित आवत जू। चरणोदक लै घर जावत जू ॥
पहिचानि सुप्रीति मुनी तिनकी। शुचि टेक विवेक समीचिनकी ॥
तिनके हितही बहिरायँ मुनी। दैके दरशन भितरायँ पुनी ॥
सब दर्शक वृन्द चवाव करें। मुनि पै पक्षपात को दोष धरें ॥
दिन एक परीक्षा लीन्ह मुनी। बहिराये नहीं सोइ भाव गुनी ॥
तनु तीनिउ ताछिन त्याग किये। चरणोदक जीवन दान दिये ॥

दो० सोरहसौ उनहत्तरो, माधव सित तिथि थीर।
पूरन आयू पाइकै, टोडर तजै शरीर ॥ ८७ ॥
मीत विरह में तीन दिन, दुखित भये मुनि धीर।
समुझिसमुझिगुनमीतके, भर्यो विलोचन नीर ॥ ८८ ॥
पांच मास बीते परे, तेरस सुदी कुआर।
युग सुत टोडर बीच मुनि, बांट दिये घर बार ॥ ८९ ॥
नख-शिखकर्ताआशुकवि, भीषमसिंह कनगोय।
आयो मुनिदर्शन कियो, त्यागे उतनु हरि जोय ॥ ९० ॥
गंग कहेउ हाथी कवन, माला जपेउ सुजान।
कठमलिया वञ्चक भगत, कहिसो गयो रिसान ॥ ९१ ॥
क्षमाकिये नहिं शापदिय, रँगे शान्ति रस रंग।
मारग में हाथी कियो, झपटि गंगतनु भंग ॥ ९२ ॥

कवि रहीम बरवै रचे, पठये मुनिवर पास।
लखि तेइ सुन्दर छन्द मैं, रचना कियेउ प्रकास॥९३॥
मिथिला में रचना किये, नहछू मंगल दोय।
पुनि प्रांचे मंत्रित किये, सुख पावें सब लोय॥९४॥
बाहु पीर व्याकुल भये, बाहुक रचे सुधीर।
पुनि विराग, संदीपनी, रामाज्ञा शकुनीर॥९५॥
पूर्वरचित लघु ग्रन्थमनि, दुहराये मुनिधीर।
लिखवाये सब आन ते, भो अतिखीन शरीर॥९६॥
जहांगीर आयो तहां, सत्तर सम्बत बीत।
धन धरती दीबो चहै, गहै न गुनि विपरीत॥९७॥
बिरबल की चर्चा चली, जो पटु बागविलास।
बुद्धि पाइ नहिं हरि भजे, मुनि किय खेदप्रकास॥९८॥
अवधपुरी को चोहड़ा, अवधवासि प्रिय जानि।
हृदय लगाये प्रेमवश, रामरूप तेहि मानि॥९९॥
सिद्ध वृन्द गिरनार के, नभ ते उतरे आय।
करिदर्शन पुलकित भये, प्रश्न किये सतिभाय॥१००॥

सो० तुमहिं न व्यापै काम, अति कराल कारन कवन।
कहिय तात सुखधाम, योगप्रभाव कि भक्तिबल॥२०॥

दो० योग न भक्ति न ज्ञानबल, केवल नाम अधार।
मुनि उत्तर सुनि मुदितमन, सिद्ध गये गिरनार॥१०१॥
बैठि रहे मुनि घाट पर, जुर लोग बहुताय।
आयो भाट सुचन्द्रमणि, विनय कियो पा रिपाय॥१०२॥

कवित्त

पन दोइक भोग विषय अरुझान अब जो रह्यो सो न खसाइय जू।
अबलों सब इन्द्रिन लोग हँस्यो अब तो जनि नाथ हँसाइय जू॥
मद मोह महा खल काम अनी मम मानस ते निकसाइय जू।
रघुनन्दन के पद के सद के तुलसी मोहि काशि बसाइय जू॥ २॥

दो० विनय सुनत पुलकित भये, कहि ऋषिराज महान।
बसहु सुखेन इतै सदा, करहु राम गुन गान॥१०३॥
हत्यारा ढिग आयऊ, विप्र चन्द तिसु नाम।
दूर ठाढ़ बोलत भयो, राम राम पुनि राम॥१०४॥
इष्टनाम सुनि मगन भे, तुरत लिये उर लाय।
आदर युत भोजन दिये, हरषि कहे ऋषिराय॥१०५॥
तुलसी जाके मुखनि ते, धोखेहु निकसे राम।
ताके पगकी पैतरी, मेरे तनु को चाम॥१०६॥
समाचार व्याप्यो तुरत, वीथिन वीथिन मांझ।
ज्ञानी ध्यानी विप्र भट, सुधी जुरे भइ सांझ॥१०७॥
कैसे घातक शुद्ध भो, कहिये सन्त महान।
कहे जु नाम प्रताप से, बांचहु वेद पुरान॥१०८॥
कह्यौ लिखो तो है सही, होत न पै विश्वास।
मन माने जाते कहिय, सोइ कर्त्तव्य प्रकास॥१०९॥
कहे जो शिवको नादिया, गहै तासु कर ग्रास।
तब तो निश्चय उपजही, सबके मन विश्वास॥११०॥
मुनि प्रसाद ऐसहि भयो, चहुँदिशि जय जयकार।
निन्दक मांगे क्षमा सब, पग परि बारम्बार॥१११॥

राम नाम दिन भर रटै, लोभ विवश मुनि थान।
सांझसमय तिसु विप्रको, द्रव्य देत हनुमान ॥ ११२॥
रामदरसहित कमलभव, हठेउ कहेउ मुनिराय।
तरुते कूदि त्रिशूल पै, दरस लेहु किन जाय॥ ११३॥
गाड़ि शूल अरु विटपचढ़ि, हिम्मत हारेउ पात।
लखेउ पछाहीं वीर इक, अश्व चढ़े मग जात॥ ११४॥
पूछेउ मर्म कहेउ कथा, सो चढ़ि विटप तुरन्त।
कूदेउ उर विश्वासधरि, दरस दीन्हभगवन्त॥ ११५॥
अन्तसमय हनुमतदिये, तत्त्व ज्ञान को बोध।
राम नाम ही बीज है, सृष्टि वृक्षमय गोध॥ ११६॥
परप्रस्थानकी शुभघड़ी, आयो निकट विचारि।
कहेउ प्रचारि मुनीश तब, आपनदशा निहारि॥ ११७॥
रामचन्द्र यश बरनिकै, भयो चहत अब मौन।
तुलसी के मुख दीजिये, अबही तुलसी सोन॥ ११८॥
सम्बत सोरह सै असी, असी गंग के तीर।
श्रावण श्यामातीज शनि, तुलसी तज्योशरीर॥ ११९॥
मूल गोसाईंचरित नित, पाठ करै जो कोय।
गौरी शिव हनुमत कृपा, राम परायन होय॥ १२०॥
सोरह सै सत्तासि सित, नवमी कातिक मास।
विरच्योयहि नित पाठ हित, वेणी माधवदास॥ १२१॥

इति॥

इसमें १ कवित्त, १ कुण्डलिया, ८ छन्द, ६ चौपाई, २० सोरठा, १२१ दोहा और तोटक ४३२ हैं।